बात करते हैं तो इसका संबन्ध संस्कृति से आता है। इसमें भी भारत की संस्कृति की कल्पना और विदेषों की संस्कृति की कल्पना में अन्तर है। भारतीय जब हम कहते हैं कि संस्कृत है तो भारत की संस्कृति व्यक्ति को स्थिर करती है। उसकी अस्थिरता समाप्त होती है। भारत की संस्कृति अगर सारे विश्व के साथ चलना है तो सीखती है कि लचीलापन रखो। जब सबको साथ में लेकर चलना है तो कोई भी विचार, कोई भी समाज रिजिड होकर नहीं चल सकता, उसको लचीलापन रखना पड़ता है। क्या छोड़ना क्या नहीं छोड़ना इसका विवेक जरूर चाहिए। इसलिए एक बात आती है कि भारतीय संस्कृति बहुत कम विस्तारवादी है, बहुत कम साम्राज्यवादी है। यह भारतीय संस्कृति है। और इसलिए यहां की संस्कृति का मनन और यही हमारी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है। इसी को हमने जिस संस्कृति को लेकर हम चले उसको लेकर चलना यही संस्कृति राष्ट्रवाद है। पश्चिमी संस्कृति क्या है? पश्चिमी संस्कृति के बारे में कहा गया कि वह मूलतः अस्थिर है। व्यक्ति को स्थिर नहीं करती है। और अस्थिरता का परिणाम होता है कि वह आक्रामक बनता है। दूसरों के बारे में असहिष्णु बनता है। विस्तारवादी बनता है। सारे दुनिया का इतिहास देखिये और भारत पश्चिमी जगत की संस्कृति यह उस समाज को, उस समूह को राजनैतिक राष्ट्रवाद की तरफ ले जाती है। जबकि भारत की संस्कृति सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ओर ले जाती है। इस मूलभूत अन्तर को स्थापित करना है इसको भी बल देना है। आज अगर हम सारे दुनिया में देखें कि अस्थिरता का कारण क्या है। हिंसा है। साम्प्रदायिक तनाव है। जाति का छोटे–छोटे समूह में विभाजन हुआ है। केवल भारत में नहीं। भारत के बाहर भी एक संकीर्ण सोच विकसित हुई है। आज के अशांति के कारण यही चार–पांच बातें हैं। असहिष्णुता है, हिंसा का मार्ग अपनाकर चलते हैं, आक्रामक बनते हैं, विस्तारवादी विचार को लेकर चलते हैं एक संकीर्ण सोच को लेकर चलते हैं। ये आज के सारे विश्व में अस्थिरता का कारण यही हो जाता है। और एक चिन्तन चला है। क्या आज सारी दुनिया धर्म रहित होनी चाहिए। एक विचार चला है, नया विचार। सारा विश्व, राष्ट्र–रहित होना चाहिए। कोई राष्ट्र वगैरह नहीं रहेगें। धर्म रहित होगा, राष्ट्र रहित होगा, ऐसा विश्व कुछ लोग आज देखना चाहते हैं। हम कल्पना करें कि क्या यह स्वाभाविक है क्या? धर्महीनता मनुष्य को पशुता की तरफ नहीं ले जायेगी? क्या यह एक राष्ट्र रहित कल्पना भिन्न भिन्न प्रकार की विचारधाराओं को सुरक्षा कैसे